Prof. Khushbu kumari
Guest Teacher
Dept. of Political science
V.S.J. college, Rajnagar, Madhubani, Lnmu

Class - B.A - I (H)

Paper - II

Topic - कौटिल्य (सप्तांग सिद्धांत)

Lecture - 2

(3) जनपद - राज्य का तीसरा महत्वपूर्ण अंग जनपद है। कौटिल्य के अनुसार जनपद का अर्थ दुर्ग द्वारा सुरक्षित नगरों के अतिरिक्त मुख्यतः राज्य के ग्रामीण क्षेत्र तथा साथ-साथ वहाँ की जनसंख्या से है। एक अच्छे जनपद के लिए कौटिल्य ने निम्नलिखित सूची प्रस्तुत की है—

(i) एक अच्छे जनपद में दुर्ग आदि के निर्माण हेतु पर्याप्त भूमि होनी चाहिये।

(ii) वहाँ की मूल जनसंख्या तथा विदेशों से आने वाले लोगों के भरण-पोषण हेतु पर्याप्त संसाधन हों।

(iii) वहाँ नागरिकों के जीवन-निर्वाह के साधन आसानी से उपलब्ध हों।

(iv) संकट के समय बचाव के सहज साधन उपलब्ध हों।

(v) वहाँ के निवासियों में शत्रु के लिये घृणा-भाव हो।

(vi) वहाँ की व्यवस्था भू-सामन्तों को नियंत्रण में रखने में सक्षम हो।

(vii) वहाँ किसी प्रकार की कीचड़-युक्त, पत्थरों से भरी, बंजर तथा असमतल भूमि नहीं हो।

(viii) वहाँ विद्रोह-भावना से युक्त लोगों

Scanned with CamScanner

का कोई संघ, मंडली पशु तथा जंगल नहीं हो।

(ix) वहाँ खेती योग्य भूमि, खनिजों के भण्डार तथा ऐसे वन हों जहाँ आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण सामग्रियों के साथ-साथ हाथियों को भी शरण प्राप्त हो सके।

(x) जहाँ पशुधन की बहुलता हो।

(xi) वहाँ, अपना जलमार्ग तथा भू-मार्ग दोनों हो।

(xii) वहाँ का व्यापार महत्वपूर्ण तथा विस्तृत हो।

इनके अतिरिक्त कौटिल्य के अनुसार प्रत्येक जनपद में कम से कम सौ घर तथा अधिक से अधिक पाँच सौ घरों वाले गाँव होने चाहिये। ये गाँव एक से दो कोस की दूरी पर बसे होने चाहिये ताकि संकट के समय एक-दूसरे की सहायता कर सके।

(4) दुर्ग — कौटिल्य के सप्तांग सिद्धान्त के अनुसार राज्य की शक्ति के निर्धारण में दुर्ग का स्थान सर्वोपरि है। इनके अनुसार राजकोष की सुरक्षा व्यवस्था में, सेना का सुरक्षित दावनी प्रदान करने में, शत्रु के साथ कपट-युद्ध युद्ध संचालन में, दुर्ग अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कौटिल्य ने दुर्ग के चार प्रकार बताये हैं—

(1) औदक दुर्ग (River fort) — इसके अन्तर्गत वे दुर्ग आते हैं जिनके

चारो ओर पानी का एक सुरक्षित घेरा हो। ये शत्रुओं के आक्रमण के समय अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होते हैं।

(ii) पर्वत दुर्ग (Hill fort) - इसके अन्तर्गत आने वाले दुर्ग पर्वत श्रृंखला अथवा बड़े-बड़े पत्थरों तथा चट्टानों से घिरे होते हैं। राज्य सुरक्षा के दृष्टिकोण से ये दुर्ग भी अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं।

(iii) धान्वन दुर्ग (Desert fort) - ये दुर्ग ऐसे मरुस्थलीय प्रदेशों में अवस्थित होते हैं जहाँ पहुँचना शत्रुओं के लिए अत्यन्त कठिन होता है। यहाँ जल तथा हरे वृक्षों का पूर्ण अभाव होता है। ये राजा की निजी सुरक्षा के लिये उपयोगी होते हैं।

(iv) वन दुर्ग (Jungle fort) - ऐसे दुर्ग जो घने जंगलों के बीच निर्मित हों तथा जहाँ पहुँचने का मार्ग शत्रुओं को आसानी से ज्ञात न हो सके, उन्हें वन दुर्ग की श्रेणी में कौटिल्य ने रखा है। ये दुर्ग भी राजा की निजी सुरक्षा के लिए उपयोगी होते हैं।

Khushbu kumari
25th sept '2020

Scanned with CamScanner